3५

परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट

हम आज के लोग है ! हम नवीनता के लोग है ! हम लोग एक ऐसे युग में जी रहे की, यह युग टेकनोलजी के अनुसार भाग रहे है। कई साल पहले हमें कई आचार था वो अब नहीं हैं ! क्या आधुनिक जीवित शैली है इसकी कारण? हमें चिंता करना है। आज रा के सजुरी में पुराण रीती को बाहर भेज रहे हैं ! हमें इसपर दुार चिंता करना होगा !

हम परंपरा से शुरू करते है ! हमरे परंपरा के बारे में कहते वक्त हमें खुद सम्मान और असम्मा दोनों होना चाहिए। क्यूँकी, हमारे परंपरा बहुत सारे अच्छे और बुरे कार्यक्रम से जुटे हुए था। पहला हम बुरा कार्यक्रम के बारे में चर्चा करूँगा !

परंपरागत काल में मनुष्य को जाती या रूप से या अपना रंगों से विवेचन कर दिया था। और ऊँचे लोग (उन्नती जाती के लोग) नीच वर्ग के लोगों से (नीचे की जाती की लोग) कठिन काम बिना वेदन या तुच्छ वेदन से किया गया था। प्रशस्त कवी और कथाकृत तकषी शिवशंकर पिल्लै और प्रेम चंद जैसे व्यक्तीयों की किताबों से इस विवेचन की आदि सूचना हमें मिल रहा है। कई लोग परिवर्तन के स्वर उठाकर, अपने जीवन दान करके इस परिस्थिती को नष्ट कर दिया।

एक और बात यह है कि परंपरा और पुरातन काल के लोग कुछ गलत आचार और अनुष्ठान से अंधा थे। जैसे कि सती और बच्चों के अपने शैशव काल में ही शादी करवानी कार्य। इन दोनों कार्यों को अलग करके पुरातन और परंपरा के लोग को हमें स्वीकार नहीं कर सकता है।

P2, 15

लेकिन ऐसी और कुछ सारी बातें है जो कि परंपरा को हम स्वीकार कर सकता है। उनमें कई है:-

परंपरागत लोग अपने प्रकृती को देवी के तरह ~~देखभा~~ देखभाल करते थे। वो प्रकृती को ईश्वर समझकर आराधना करते थे। कई पुराण जैसी रामायण और महाभारत जैसे ग्रंतो से हमें यह समझ में आयेगा। कई समय वो लोग अपने प्रकृती को पूजा करके बिताता था। उसकी सुन्दर रखने केलिए कठिन प्रयत्न भी कर रहा था। वो लोग प्रकृती को अपने माँ की तरह शुश्रूषा की गई थी।

पुरातन संसार के लोग अपने परिवार को अच्छे तरह पालते थे। जैसे उनके जीवित रीती आदि सुख और समाधान के रूप थे। वो लोग अपने अपने प्रवती खुद करते थे। परिवारों को देखते वक्त एक बात बताना जरूरी है कि

सबको अपने परिवार में सफलता मिली थी। पत्नी पति को ईश्वर के रूप में देखता था और वहाँ डिवोर्स नहीं था।

पुरातन ~~संस्था~~ समाज के लोग बीमारियों से स्वतंत्र थे। उनकी जीवित शैली बीमारियाँ नहीं थे। परंपरागत समाज के लोग अपने शरीर को अच्छे तरह देखभाल करते थे और अच्छा व्यायाम शरीर को ~~देख~~ देते थे। इसलिए की वो लोग बीमारियों से वंचित नहीं था। और अच्छा स्वास्थ्य बनाकर रखा।

आधुनिक समाज के लोग कई बात में व्यस्थ है। जैसे की अपना जीवित शैली, खाने या भोजन का शैली, स्वास्थ्य या विद्या। आधुनिक समाज के लोग पुरातन समाज के लोगों से कई बातों में आगे है और कई बातों में नीचे है। इन कार्यों को हम यहाँ चर्चा करना चाहिए।

नवीन समाज के लोग उन्नती के ओर बड रहा है। पुरातन समाज के पुरोगामी से लेकर हम कई बात में आगे है और कई बात में बहुत पीछे। हम किसी ~~बात~~ किसी बात में पीछे है। आईये देखते है।

~~एक~~ पहली बात है प्रदूषण। आज के इस समाने मे प्रदूषण कुछ ज़्यादा बड चुका है। वायू, जल, आवाज, और भूमी को आज के इनसान नाश कर रहा है। परंपरागत लोग प्रकृती को ईशवर समझते थे और आज के लोग उसको ~~a~~ एक दुश्मन समझ रहा है। डबलियू. एच. ओ के अनुसार दीवाली को नयी दिल्ली विशव में सबसे प्रदूषित शहर था। प्रदूषण के कारण हमारा स्वास्थ्य दुर्बल हो रहा है। इस समस्या को हमें

~~छो~~ छोड़ देना ज़रूरी है।

आजकल प्रतिस्पर्धा है आधुनिक लोगों की खाने की। सब लोग अपने शरीर को हानी पहुँचाने जैसे खाना खा रहा है। इस कारण से बीमारियाँ ~~बढ़~~ ~~रहा~~ फैल रहा है। और अनेक लोग मर रहा है। स्वयं इनसान अपने आप को नाश कर रहा है। ~~क~~ अपना ~~का~~ अच्छा स्वास्थ्य वाला शरीर प्रकृती की वरदान है। इस बात को न समझकर लोग बुरा खाना ~~खा~~ खा रहा है। स्वास्थ्य को अच्छा देखभाल करना चाहिए।

आज के समाज में परिवार और लोग द्वारा ~~अनु~~ बंध शिथिल हो रहा है। और केवल समाजिक माध्यमों से बंधित करता है। दूसरों को सम्मान देना ~~भ~~ भूल रहा है आज के समाज की लोग। यह एक कठिन समस्या है।

इसको दूर करना है। और जिसको अच्छा सम्मान देना है इसको देने को सीखना चाहिए।

ऊपर हम चर्चा किया अपने समूह के दुष्य फल को अब हमें आधुनिक समाज के अच्छे कार्यक्रम पर देखना चाहिए। आज के लोग उन्नती की ओर बढ़ रहा है। हमने लाल तारे को भी अपने हाथ में कर गया है। हमारे समाज की बहुत अच्छी बात यह है कि सब लोग विद्या से समपन्न है। और इस आधुनिक काल में कोई भी जाती विवचन या रंग से विवचन नहीं है। और यहाँ कोई अनाचार नहीं है। यही इस समूह का धन है। यहाँ सब लोग एक है। और किसीको इस दीवार को थोड नहीं पाएगा।

आधुनीक लोग कला को अपने पास सब समय अपने आप के एक साथी बनाता है। दुख के समय पर या संघर्ष के समय पर हम लोग कला को अपने साथ मिलता है। आधुनीक समूह में सामाजिक माध्यमों से कई लोग नये नये रिश्ते बना कर रहा है। इस के कारण कई लोग अपने अपने बीच में संबंध जोडता है। सब लोगों को प्यार करने वाले एक समाज है हमारा। और आधुनीक विधयाभ्यास इसका एक बडा सहारा है।

आधुनीक समाज और परंपरागत समाज के बीच एक बडी टकराहट हो गया है। कई बात में परंपरा के लोग आगे है चरित के अनुसार, और कई कार्य मे आधुनीक लोग आगे है। इसमें मेरा मामला यह !

१२

है कि हम अधुनीक लोगों को ~~परंग~~ परंपरागत लोगों के आच्छे वस्तुताओं को पीछा करके, जैसे की अपने वृक्ती की देखभाल, परिवार की देखभाल आदि ~~की~~ को पीछा करके और उन्नती के ओर बडना होगा।